कुचिपुड़ी

स्रोत: द हिंदू

भारत के सबसे पुराने नृत्य रूपों में से एक **कुचिपुड़ी,** अब युवा पीढ़ी के बीच अप्रचलित होता जा रहा है। कुचिपुड़ी आंध्र प्रदेश के कृष्णा ज़िले का एक गाँव है।

- कुचिपुड़ी एक **नृत्य-नाटिका प्रदर्शन** है, जो प्राचीन काल में पुरुषों तक ही सीमित हुआ करता था। यह **हिंदू पौराणिक** कथाओं की कहानियाँ दर्शाता है और लोगों के बीच अपना संदेश पहुँचाता है। **कुचिपुड़ी भारत के 8 शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक है।**
- पीढ़ियों से, लोगों ने **गुरु-शिष्य** परंपरा के माध्यम द्वारा इस शास्त्रीय नृत्य को सीखा है।
- वर्तमान में, यह कला सरकार से **संरक्षण की कमी** के कारण संकट की स्थिति में है, साथ ही इस कला ने महामारी के वर्षों में **इसके पारंगत छह गुरुओं** को खो दिया और भविष्य में युवाओं के लिये इसमें **अवसरों की कमी** है। वर्ष 2014-18 के बीच संगीत नाटक अकादमी ने आंध्र प्रदेश राज्य सरकार के सहयोग से **कुचिपुड़ी यक्षगानम** के ऑडियो, वीडियो और फोटो को संग्रहीत किया है।
- **गुरु पसुमर्थी रत्तैया सरमा**, यक्षगणों के एक प्रमुख, कुचिपुड़ी गाँव में रहने वाले सबसे पुराने गुरु हैं।

कुचिपुड़ी
(आंध्रप्रदेश)

उत्पत्ति

17वीं शताब्दी में एक वैष्णव कवि सिद्धेन्द्र योगी ने यक्षगान के रुप में कुचीपुड़ी शैली की कल्पना की।

कुचीपुड़ी आंध्रप्रदेश के कृष्णा ज़िले में स्थित एक गाँव का नाम है।

शृंगार रस की प्रधानता।

विषयवस्तु: पंथ-निरपेक्ष

वाद्ययंत्र

- मृदंगम
- मंजीरा
- वायलिन या वीणा

एकल प्रदर्शन

मंडूक शब्दम: एक मेंढक की कहानी।

तरंगम: नर्तक अपने कर्तब को एक पीतल की तश्तरी के किनारे पर पाँव रखकर तथा अपने सिर पर एक जल पात्र या दीयों के एक सेट को संतुलित रखते हुए प्रस्तुत करता है।

जल चित्र नृत्यम: नर्तक/नर्तकी अपने पैर के अंगूठों से सतह पर चित्र खींचता/खींचती है।

प्रदर्शन

कावुत्म: नृत्य (व्यापक कलाबाजी) तथा नृत्त (शुद्ध नृत्य)

सोल्लाकाथ या पताक्षर: नृत्त भाग समूह प्रदर्शन

मुख्य विषयवस्तु: भागवत पुराण की कहानियाँ

नर्तकों को भागवतालु कहा जाता है।

लास्य और तांडव दोनों तत्त्व महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रसिद्ध प्रतिपादक

- राधा रेड्डी
- यामिनी
- इंद्राणी रहमान
- राजा रेड्डी
- कृष्णमूर्ति

Drishti IAS

और पढ़ें: कुचिपुडी नृत्य शैली

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/kuchipudi